डॉ. रश्मि जैन
वास्तु विशेषज्ञ

श्रीकृष्ण से मांगें वरदान

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की कथा से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। लेकिन इस शुभ अवसर पर वास्तु के अनुसार ऐसा क्या करें, जिससे हमारे घर की ऊर्जा पूरे वर्ष सकारात्मक बनी रहे और हमें श्रीकृष्ण का वरदान प्राप्त हो?

हमारी भारतीय संस्कृति जिंदगी के हर रूप एवं पहलू को बहुत भव्यता के साथ उत्सव के रूप में मनाती है। जन्माष्टमी वात्सल्य रूप को समेटे हुए एक अद्‌भुत अप्रतिम त्योहार है, जो सिर्फ हमारे देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व रक्षाबंधन के बाद भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है।

कृष्ण के बाल रूप की मूर्ति को बेहद उल्लास से सजाना, उनके वस्त्र, झूला, भोग आदि का सुंदर तरीके से प्रबंध करना, व्रत रखना, पूजा-पाठ एवं सामूहिक भजन संध्या आदि कुछ ऐसे कार्य हैं, जो न सिर्फ हमारी ममता को अलौकिक रूप देते हैं, बल्कि सामूहिक रूप से पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को घनिष्ठ भी बनाते हैं।

महिलाओं को रोजाना ही तनाव, मुश्किलों और संघर्षों का जीवन जीना पड़ता है। श्रीकृष्ण की भक्ति हर महिला-पुरुष को जीवन के संघर्षों से निकालकर खुशियों और प्रसन्नता के संसार की ओर ले जाती है। योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवन तमाम बाधाओं को पार करते और सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए नकारात्मक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। हमें जीवन में हर पग पर और हर पल किसी न किसी प्रकार के संघर्ष का सामना करना पड़ता है। श्रीकृष्ण की भक्ति की शक्ति जीवन के इन संघर्षों पर विजय प्रदान करती है। जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण की उपासना से जीवन में शांति, समृद्धि, मनोकामनापूर्ति और प्रेम की प्राप्ति होती है। फिर जीवन में चाहे कितनी भी

लड्डू गोपाल के रुप में भगवान श्रीकृष्ण की छोटी मूर्ति घर में रखने और उसका अपने बच्चे की तरह ध्यान रखने से घर का वातावरण खुशनुमा बना रहता है।

ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने का शुभ अवसर प्रदान करता है और कृष्ण आराधना ईश्वर से जुड़ने का सेतु बनता है। भगवान श्रीकृष्ण का अलौकिक स्वरूप पूरे संसार को प्रकाशित करता है। भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को चंद्रमा आधा राधामय और आधा कृष्णमय हो जाता है। राधा-कृष्ण के बिना सृष्टि पूरी नहीं हो सकती। कृष्ण के साथ राधा की भक्ति हमारे जीवन के सारे सुख-दुख, लाभ-हानि, सकारात्मक-नकारात्मक तत्वों का समन्वय करती है। राधा-कृष्ण की संयुक्त शक्तियां भक्तों के जीवन में आने वाले कष्टों को समाप्त कर जीवन को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाती हैं और

श्रीकृष्ण को बांसुरी की तरह मोर पंख भी अतिप्रिय है। जन्माष्टमी पर मोर पंख कान्हा को जरूर अर्पित करना चाहिए।

मुश्किलें आएं, श्रीकृष्ण की कृपा और उनकी भक्ति से आप विपरीत हालात का सामना भी बेहद आसानी से कर पाती हैं।

जन्माष्टमी पर व्रत और पूजा-उपासना द्वारा मन की वृत्तियां नियंत्रित होती हैं और इससे कष्ट एवं पीड़ा दूर होती है। हर महिला-पुरुष के भीतर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार की वृत्तियां होती हैं। जब हम विधि-विधानपूर्वक व्रत-उपवास का करते हैं तो हम नकारात्मक वृत्तियों का त्याग कर सकारात्मक वृत्तियों को विकसित करते हैं और तब हमें मुश्किलों से निकालने के लिए ईश्वर स्वयं किसी न किसी रूप में आते हैं। श्रीमद्भगवद गीता के अंतिम श्लोक के अनुसार, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं और जहां धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं समृद्धि, विजय और सुख का निवास है। इसलिए संपूर्ण और ज्ञानवान जीवन के लिए जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण के उपदेश को आत्मसात करना चाहिए।

मोहमाया होने के कारण हम ईश्वर से दूर होते जाते हैं। ऐसे में जन्माष्टमी पर्व हमें फिर से इसीलिए जन्माष्टमी पर समूचा संसार कृष्णमय हो जाता है। श्रीकृष्ण की सारी लीलाएं जीवन के संघर्षों की ओर संकेत करती हैं, फिर चाहे वह अर्द्धरात्रि के समय कारागार में जन्म हो या फिर जन्म के बाद मां यशोदा तक पहुंचने की यात्रा।

अर्द्धरात्रि को जब भक्त भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाते हैं तो उनकी चेतना का विस्तार होता है। शुद्ध भावनाओं और सकारात्मक विचारों के सृजन से श्रीकृष्ण साक्षात मन के मंदिर में पधारते हैं और सारे योग-क्षेम को स्वयं वहन करते हैं। जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण की उपासना, पूजा-पाठ और व्रत-उपवास करने से चेतना की उच्चतम स्थिति प्राप्त होती है।

कृष्ण जन्माष्टमी की कथा से हम सभी भली-भांति परिचित हैं, मगर इस शुभ अवसर पर वास्तु के अनुसार ऐसा क्या करें, जिससे हमारे घर की ऊर्जा पूरे वर्ष सकारात्मक बनी रहे।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर के ईस्ट ऑफ नॉर्थ-ईस्ट क्षेत्र वात्सल्य, प्रेम, खुशियों और प्रसन्नता जुड़ा होता है। इसलिए इस पवित्र जन्माष्टमी पर इस क्षेत्र में रंगोली बनाना, लड्डू गोपाल का झूला टांगना, चित्र टांगना और रोशनी करना इस क्षेत्र को शुभ एवं ऊर्जावान बनाता है, जो आपकी इच्छापूर्ति में सहायक होता है।

जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर अपने घर के मंदिर के दरवाजे रात्रि में खुले रखें एवं दीया जलाकर अच्छी तरह रोशनी का प्रबंध करें। इसके लिए आप सुनहरे एवं विभिन्न रंगों की झालरों का उपयोग कर सकती हैं। मंदिर में पुष्प-सज्जा एवं रंगोली बनाना बहुत शुभ माना गया है, परंतु इसमें काले रंग का उपयोग नहीं करना चाहिए। कान्हा को यथाशक्ति बांसुरी अवश्य अर्पित करें। पूजा के बाद यह बांसुरी आप अपने पास संभाल कर रख सकती हैं। यह आपको विपरीत परिस्थितियों में भी खुश रहने एवं उचित निर्णय लेने में सहायता करेगी।

श्रीकृष्ण को बांसुरी की तरह मोर पंख भी अतिप्रिय है। इस दिन मोर पंख कान्हा को जरूर अर्पित करना चाहिए। इससे घर में खुशहाली बनी रहती है, ग्रह क्लेश शांत होते हैं और सुख, शांति एवं समृध्दि आती है।

श्रीकृष्ण के बाल रूप की मूर्ति घर में रखना वात्सल्य एवं संतान सुख के लिए बहुत शुभ माना जाता है। श्रीकृष्ण एवं राधा की खड़ी मुद्रा में तस्वीर से खुशियों का आगमन सुनिश्चित होता है। संतान सुख की प्राप्ति के इच्छुक भक्तों को श्रीकृष्ण के बाल रूप की मूर्ति या तस्वीर को घर के ईस्ट ऑफ नॉर्थ-ईस्ट जोन में रखना चाहिए। वासुदेव द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को टोकरी में रखकर नदी पार कराने वाला चित्र भी घर में लगाना शुभ माना जाता है। यह इस बात की प्रेरणा देता है कि कितनी भी विपरीत परिस्थितियां हों, यदि धैर्यपूर्वक एवं साहस से कार्य किया जाए तो लक्ष्यसिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

लड्डू गोपाल के रूप में भगवान श्रीकृष्ण की छोटी मूर्ति घर में रखना और उसका अपने बच्चे की तरह ध्यान रखना बहुत शुभ माना जाता है। इससे घर का वातावरण खुशनुमा रहता है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन व्रत का विधान है, जिसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार श्रद्धापूर्वक अवश्य करना चाहिए।

अपनी खुशियों को समाज के साथ बांटते हुए कुछ बेसहारा बच्चों में फल, मिठाई का वितरण अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य करना चाहिए। बच्चों के चेहरों पर आई मुस्कान सही मायनों में हमें प्रसन्नता देगी तथा भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से हम और हमारी संतान हमेशा खुश रहेगी।